पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिक शिक्षा

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि किस चीज़ की वजह से लोग ज़्यादा जन्नत में जायेंगे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह से डर और अच्छे चरित्र की वजह से, पूछा गया कि किस वजह से लोग ज्यादा जहन्नम में जाएंगे पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुबान और शर्मगाह (गुप्तांग)

आप पूरे संसार वालों के लिये दयालू कृपालू और अध्यापक एवं प्रशिक्षक बना कर भेजे गये थे। आप का पवित्र जीवन चाहे वह नबी बनाये जाने से पहले का हो या नबी बनाए जाने के बाद, हर क्षण मानवता को मार्गदर्शन करते हैं यही वजह है कि जब माई आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से आप के चरित्र, नैतिकता और व्यवहार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया आप का चरित्र और नैतिकता कुरआन था यानी आप का जीवन कुरआन का व्यवहारिक आदर्श और रूप था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी आदर्श को अपनाने में दुनिया व आखिरत की भलाई व कामयाबी है और इसी चरित्र के सहारे हम दुनिया वालों के सामने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद की सच्ची छवि पेश कर सकते हैं, जो लोग हमें नफरत की निगाह से देखते हैं हम इसी चरित्र और अच्छे व्यवहार के बलबूत उनको अपने से करीब और उनको अपना समर्थक बना सकते हैं। क्योंकि सदाचार और नैतिकता के अन्दर अल्लाह ने वह प्रभाव रखा है जिस का ऐतराफ बड़े बड़ों ने किया और इस्लाम की खूबियों को स्वीकार किया है। बुखारी में आप के चरित्र को इन शब्दों में बयान किया गया है कि आप न तो बुरे स्वभाव के हैं, न सख्त स्वभाव के, न ही बाज़ारों में शोर व हंगामा करते हैं और न ही बुराई का जवाब बुराई से देते हैं बल्कि मआफी का मामला करते हैं। आप के सेवक हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप की आदतें सब लोगों से अच्छी थीं और स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से सबसे बेहतर वह है जिस की आदतें सबसे अच्छी हों अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण व व्यवहार को अपनाएं और इसको जन्नत में जाने का माध्यम बनाएं। आप को नबी बनाया जाने से पहले सच्चा और एमानतदार कहा जाता था। आप ने अपने चरित्र एवं व्यवहार से लोगों को प्रभावित किया और हर एक के दुख दर्द के साथी बने रहे। नबी बनाये जाने के बाद जब आप पर अल्लाह की तरफ से पहली वह्य (प्रकाशना) अवतरित हुई तो आप परेशान हो गये लेकिन आप की जीवन साथी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप को तसल्ली देते हुए कहा ‘‘हर्गिज़ नहीं आप खुश हो जाएं अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला आप को कभी रूस्वा नहीं करेगा, अल्लाह की क़सम आप तो रिश्ता नाता जोड़ते हैं, सच बोलते हैं, लोगों का बोझ सहन करते हैं जरूरतमन्द को कमा कर देते हैं, मेहमाननवाज़ हैं और हक़ के मामले में डट कर मदद करते हैं, उपर बयान की गई हदीस में उसी चरित्र का बयान है जो जन्नत में ले जाने का सबब बनेगा। एक मौक़े पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छे स्वभाव और चरित्र वाला इन्सान रोज़ेदार और रात में इबादत करने वाले के स्थान को पा लेता है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अच्छे आचरण वाला बनाएं। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

दिसंबर 2020 वर्ष 31 अंक 7

जुमादल ऊला 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली सलफ़ी

संपादक

एहसानुल् ह़क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. पैग़म्बर मुहम्मद स० की नैतिक शिक्षा 2
2. इस्लाम में विवाह का तरीक़ा 4
3. नेकी का फल 5
4. सावधानीपूर्वक उपाय 6
5. तन्दुरूस्ती महान नेमत है 7
6. क़ुरआन में सद्व्यवहार की शिक्षाएं 9
7. हमारा ईमान 14
8. संबन्धों में बिगाड़ के कारण और एलाज 15
9. एलाने दाखिला 16
10. प्रेस रिलीज़ 17
11. हाफिज़ मुहम्मद यहया रह० (नज़्म) 19
12. विज्ञापन 20
13. पैग़म्बर मुहम्मद स० के उपदेश 21
14. हसद के नुकसानात 24
15. तक़वा 26
16. जानवरों पर दया करने का फल 27
17. कलैन्डर 2020 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

इस्लाम में विवाह का तरीक़ा

नौशाद अहमद

शादी विवाह एक पवित्र रिश्ता जोड़ने का नाम है, और इसका चलन लगभग सभी वर्गों में पाया जाता है केवल तरीके और आस्था का अन्तर है, लेकिन आज भी नियमित रूप से शादी विवाह को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और इससे हट कर जो भी रिश्ते बनाये जाते हैं वह आम तौर से सम्मान की निगाह से नहीं देखे जाते, यह इन्सान के जीवन का एक धार्मिक पहलू है अब यह इन्सान के सोच विचार पर निर्भर करता है कि वह किस हैसियत से देखा जाना पसन्द करता है। शादी के मामले में इस्लाम की शिक्षा यह है कि एक खास तरीक़े से दो पक्षों की आपसी सहमति और पसन्द से रिश्ता जोड़ा जाता है इसमें एक शर्त यह भी है कि वह दोनों लड़का और लड़की मुसलमान हों अब अगर कोई भी मुस्लिम लड़का या लड़की इस्लाम के बताए गये शादी के तरीक़े के विपरीत क़दम उठाता है तो इसका मतलब यह हुआ कि ऐसा लड़का या लड़की जजबात के सैलाब में बह गये या फिर उन्हें अपने धर्म की पूरी जानकारी नहीं और उनका यह कदम धर्म के विरूद्ध है। कोई भी मुस्लिम लड़का या लड़की किसी गैर धर्म के लड़के या लड़की से शादी नहीं कर सकता। इस्लाम ने किताबिया से शादी की इजाज़त तो दी है लेकिन फिर भी फुकहा ने मौजूदा दौर की किताबिया के सिलसिले में कुछ तफसीलात बताई हैं जिनको ध्यान रखना चाहिए। अगर थोड़ी देर के लिये यह मान लिया जाए कि किसी मुस्लिम लड़के ने किसी दूसरे समुदाय की लड़की से शादी कर ली है तो उसके इस गलत काम को पूरी कम्यूनिटी या उसके ध र्म से नहीं जोड़ा जा सकता, कोई भी मुसलमान इस तरह की हरकत करने वाले नौजवान से न तो सहमत होता है और न ही उसका परिवार इसका समर्थन करता है बल्कि खानदान और परीवार के सदस्य इस तरह की घटना से अपमानित होते हैं, दो परिवार वालों की इज्जत दांव पर लग जाती है। इसी तरह किसी मुस्लिम लड़की को भी किसी दूसरे समुदाय में शादी से मना किया गया है।

आज कल जिस लव का उल्लेख किया जा रहा है वह हकीकत में एक अवैध संबन्ध का नाम है इसको धर्म पर यक़ीन रखने वाले पसन्द नहीं कर रहे हैं। इस तरह के काम में दुनिया के दूसरे समुदाय भी लिप्त हैं लेकिन शादी विवाह की आड़ में केवल एक ही समुदाय को निशाना बनाना न तो धर्म की सेवा है और न दी मानवता की सेवा। इसका अचूक एलाज यह है कि हर धर्म के लोग अपने धर्मावलंवियों में यह जागरूकता पैदा करें कि वह महज़ शादी के नाम पर धर्म परिवर्तित न करें, इस्लाम इसका सख्त विरोधी है, वह लालच, दबाव और धोंस के आधार पर धर्म बदलने की निन्दा करता है। लेकिन यह कितने खेद और दुख की बात है कि कुछ लोग बाज लोगों के गलत कर्मों को उसके धर्म और उसके पूरे समुदाय को बदनाम करने का आधर मानने लगते हैं जिस को किसी भी तौर से उचित और न्याय संगत नहीं करार दिया जा सकता। जो लोग भ्रमित हो गये हैं उनको इस्लाम की शादी विवाद से संबन्धित शिक्षाओं का निष्पक्ष अध्ययन करना चाहिए, भ्रमित होने से बचने का यही उपाय है।

❑ ❑ ❑

नेकी का फल

मौलाना असअद आज़मी

सब्र, स्थिरता, संयम, नेकी, भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना और इस जैसी नेकियां अल्लाह की मदद की प्राप्ति का सबब बन सकती हैं और कम तादाद के बावजूद मुसलमानों को सफलता की ओर ले जाती हैं इसके विपरीत हमारी तादाद चाहे जितनी भी हो जाए अगर यह खूबियां और विशेषताएं हमारे अन्दर नहीं हैं तो हमारी कुछ भी हैसियत नहीं होगी।

प्रिय देश के अन्दर अगर्चे हमारी तादाद कम है लेकिन हम अपने अच्छे व्यवहार और सदाचार से देशबन्धुओं का दिल जीत सकते हैं, सच्चाई, ईमानदारी, एमानतदारी, वचन पूरा करना, पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यहवार, बेसहारा लोगों से हमदर्दी से दिल जीत सकते हैं, कमजोरों का सहयोग के साथ, गलत व्यवहार से परहेज, बेईमानी, धोका धड़ी, जैसे बुरे कर्मों से परहेज करें, इससे लोग हमारे करीब आएं गे और हमारे दीन धर्म के बारे में अच्छा विचार रखेंगे। इसी तरह कम तादाद में होते हुए भी हमारे लिये यह ज़रूरी है कि हम दूसरों की अपेक्षा ज़्यादा मेहनत करें, खास तौर से तालीम के मैदान में क्योंं कि इस मैदान में अपने कदम मजबूत करके हम बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं क्यों कि जमीनी हकीकत यह है कि तालीम में हम दूसरों के बराबर होना तो दूर की बात, उनसे हम काफी पीछे हैं। इस मामले में इस्राईल को देखिये यहूदी पूरी दुनिया की आबादी का शायद एक प्रतिशत भी नहीं हैं लेकिन तालीम और मेहनत के बलबूते पर वह पूरी दुनिया के राजनीतिक आर्थिक और शैक्षिक मार्गदर्शन कर रहे हैं और अपना इतना प्रभाव बना रखा है कि हम शायद इस की कल्पना भी नहीं कर सकते।

अल्पसंख्यक की हैसियत से हमारे लिये यह भी ज़रूरी है कि हम अपने दीन पर मजबूती से काइम रहें और अपने कर्म और धार्मिक पहचान की अच्छी तरह हिफाज़त करें। किसी से प्रभावित हो कर अपने अकीदे से दूर न हों, क्योंकि इस का कोई दुनियावी फायदा नहीं है बल्कि यह महज एक छलावा है, इस की वजह से हम दीन व दुनिया दोनों बर्बाद करते हैं।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स लोगों को नाराज़ करके अल्लाह की खुशी चाहेगा तो लोगों से पहुंचने वाले दुख के सिलसिले में अल्लाह उसके लिये काफी (रक्षक) होगा और जो अल्लाह को नाराज़ करके लोगों की खुशी पाना चाहे गा तो अल्लाह उनही लोगों को उसे दुख देने के लिये नियुक्त कर देगा'' (सुनन तिर्मिज़ी २४१४ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है) सारांश यह है कि हम अपनी कम तादाद को अपनी कमजोरी हर्गिज़ न समझें, न इस्लाम की शिक्षाएं इस की पुष्टि करती हैं और न ही इतिहासिक यथार्थ से यह बात सच साबित हुई है। बल्कि हमारे बहैसियत होने और पतन का सबब ईमान व अमल और सदाचार से दूरी है। हमें इस पइलू से अपनी इस्लाह सुधार और आत्मनिरीक्षण करने की ज़रूरत है।

सावधानीपूर्वक उपाय

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

इस्लाम ने बीमारियों से बचने के लिये सावधनीपूर्वक उपाय करने की शिक्षा और निर्देश दिया है ताकि समाज शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहे। हर चरण में उसने सफाई सुथराई का एहतमाम करने की प्रेरणा दी है। शरीर, हाथ, दांत, नाखून, बाल, कपड़ा, खाने पीने के सामान, रास्तों, घरों, शहरों, पानी के संसाधन कुवां, नहर इन सबको साफ रखने पर विशेष रूप से बल दिया गया है संक्रमण फैलाने वाले रोग से बचाव के लिये क्वारनटीन, यानी मरीज़ को अलग रखना, जहां कोई महामारी फैली हुई हो न वहां जाना और न ही वहां से भागना, मरीज़ के पास जाने और वहां से निकलने के बाद हाथ को सैनीटाइज़ करना, दवा का सहारा लेना इन सब निर्देशों को इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में समझा जा सकता है। इसी तरह हराम और हलाल के बारे में पूरी तफसील बताई गई है। इस के अलावा मुर्दार, खून, सुअर का गोश्त और मादक पदार्थ को हराम करार दिया गया है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये लैगिंक अनारकी, व्यभिचार, अप्राकृतिक संभोग, और पीरियड के दौरान औरतों से शारीरिक संबन्ध बनाने से मना किया गया है और पीरियड की मुददत समाप्त होने और संभोग के बाद स्नान करने का आदेश दिया गया है।

उपाय के तौर पर इस बारे में पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० का फरमान है ''जो सात अजवा खुजूरें सुबह खाए तो उसे पूरे दिन न तो उस पर कोई ज़हर असर करेगा और न ही जादू''। एक रिवायत में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से बयान है कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) स० ने फरमाया जो बन्दा हर दिन सुबह शान तीन तीन बार यह दुआ पढ़ेगा, उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचाए गी ''बिस्मिल्लाहिल लजी ला यजुर्रो मआ इस्मिही शैउन फिल अर्जी वला फिस्समाई वहुवस्समीउल अलीम'' यानी मैं उस अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जिस के नाम से ज़मीन व आसमान में कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचा सकती और वह सुनने वाला और जानने वाला है।'' (अबू दावूद, तिर्मिज़ी) हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ही से रिवायत है आप स० ने फरमायाः जो शख्स सूरे बकरा की आखिरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वह उसकी हर चीज़ से हिफाज़त करेंगी। (बुखारी) अर्थात हर आफत व मुसीबत और बुराई से सुरक्षित रहेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबैब रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि हम एक घोर अंधेरी रात में आप स० को ढूडने निकले ताकि आप हमें नमाज़ पढ़ाएं। रावी बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से मिले तो फरमायाः बोलो, मैं कुछ नहीं बोला, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बोलो, मैंने फिर कुछ नहीं बोला, आप ने फरमाया कहो, मैंने कहा क्या कहूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया सुबह व शाम तीन बार कुल हुवल्लाहो अहद और सूरे फलक व सूरे अन्नास पढ़ो, यह हर चीज़ से तुम्हारे लिये सुरक्षा होगी। (तिर्मिज़ी)

❑ ❑ ❑

तन्दुरूस्ती महान नेमत है

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

सेहत और तन्दुरूस्ती अल्लाह की बड़ी नेअमत और तोहफा है, यह तमाम तरक्कियों की कुंजी है। एक बीमार व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह बीमारी की चंगुल से आज़ाद हो जाए चाहे इसकी जो भी कीमत अदा करनी पड़े लेकिन अगर यही सेहत छिन जाए तो दुनिया के खजाने खर्च करने के बाद भी यह नेमत वापस नहीं आ सकती। इसी लिये कहा जाता है कि तन्दुस्ती हज़ार नेमत है।

आज का इन्सान विभिन्न रोगों से घिरा हुआ है खास तौर से कोरोना जैसी मुसीबत जानलेवा और खतरनाक मर्ज़ दुनिया वालों के लिये पाठप्रद बन चुका है और मानवीय सभ्यता का कारवां जिन्दगी की आखिरी सांसें गिनने लगा लगा है। अल्लाह हम पूरी मानवता को इससे सुरक्षित रखे।

इस्लाम के सभी सिद्धांत और कानून पूरी मानवता के लिये सफलता की गारन्टी लेते हैं और यह हर जमाने के लिये व्यवहारिक है। यह इन्सान को तमाम बीमारियों और महामारी से सुरक्षित देखना चाहता है और स्वास्थ्य के ऐसे शाश्वत सिद्धांत पेश करता है जो मानवता की सुरक्षा और जान व माल की सुरक्षा की गारन्टी लेता है। यह सहीह है कि स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये संतुलित खान पान, वर्जिश, मानसिक सुख, एलाज और परहेज, प्रदूषण से पवित्र वातावरण बेहद ज़रूरी है। यह चीज़ हमारे जीवन को सुगम बनाने में सहायक होती है। इसके साथ इस्लाम धर्म हमें पवित्रता और पाकी व सभाई का हुक्म देता है। वह यह चाहता है कि हमारा शरीर, हमारा घर बार, वातावरण बल्कि इन्सान की पूरी जिन्दगी पाक व साफ होनी चाहिए। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

अल्लाह तौबा करने वालों और पाक (पवित्रा) रहने वालों को पसन्द करता है। इस्लाम में सफाई को ईमान का आधा हिस्सा करार दिया गया है।

विश्व संस्थाओं के अनुसार कोरोना वायरस से बचने के लिये ज़रूरी है कि हम हाथ धोंए, स्नान करें, कपड़े साफ रखें, इन सब बातों का हुक्म इस्लाम ने भी दिया है। सो कर उठो तो पहले हाथ धोलो, वुजू करो, और हर वुजू और नमाज़ के वक़्त मिस्वाक कर लिया करो। वुजू सफाई सुथराई का अनमोल तरीक़ा है।

आम तौर पर लोगों को जो नज़ला, जुकाम और फलो होता है उसकी वजह यह है कि लोग अपने गन्दे हाथों से अपनी नाक और आंखों को मलते हैं। वजू करने से जरासीम (कीटाणु) मर जाते हैं, पसीने की बदबू खतम हो जाती है, ताज़गी पैदा होती है और खून का सरकूलेशन अच्छा हो जाता है वजू आधा स्नान है जिसे हम पांच बार करते हैं।

स्नान करने से शरीर को जो लाभ मिलता है इसी के दृष्टिगत इस्लाम ने स्नान के जरिए शरीर की सफाई और पाकी का जो तरीक़ा बताया है वह इस्लाम के अलावा किसी दूसरे धर्म में नहीं मिलता।

नापाक होने के बाद इस्लाम ने स्नान का हुक्म दिया है। पीरियड और बच्चे की पैदाइश के बाद नापाकी

को दूर करने के लिये इस्लाम ने औरतों को स्नान करने का हुक्म दिया है।

नमाज़ रोज़े और अन्य इबादतों से हमारे शरीर पर सुगम प्रभाव पड़ते हैं। इस्लाम ने जो चीज़ें हलाल की हैं वह हमारे शरीर के लिये लाभकारी हैं और जिन नापाक चीज़ों को हराम करार दिया है जैसे कि शराब, सुअर और मादक पदार्थ वह हमारे स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक हैं इन चीज़ों के सेवन से हमारे शरीर को बड़ी खतरनाक बीमारियां होती हैं। खाने पीने में संतुलन, दवा व एलाज की प्ररेणा, शादी विवाह का हुक्म, सफाई का हुक्म इस्लाम के उज्जवल सिद्धांत हैं।

आज कोरोना वायरस महामारी साधारण है, कितने लोग इससे मर चुके हैं, ऐसे अवसर पर अगर आप घर पर सुरक्षित हैं, अम्न व अमान के साथ हैं, शरीर बीमारी से पाक है, घर में खाने पीने के सामान हैं, तो अल्लाह की बहुत बड़ी मेहरबानी समझिए और सर उसके दर पर झुका दिजिए। आप बड़े सौभागशाली हैं, पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''तुम में से जिसने भी इस हाल में सुबह की कि वह अपने घर में अम्न व अमान (सुख चैन) से है उसका शरीर बीमारी से सुरक्षित है तो मानो कि उसके लिये पूरी दुनिया समेट दी गयी है'' यानी बहुत बड़ी नेमत मिली हुई है।

नमाज़ रोज़े और अन्य इबादतों से हमारे शरीर पर सुगम प्रभाव पड़ते हैं। इस्लाम ने जो चीज़ें हलाल की हैं वह हमारे शरीर के लिये लाभकारी हैं और जिन नापाक चीज़ों को हराम करार दिया है जैसे कि शराब, सुअर और मादक पदार्थ वह हमारे स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक हैं इन चीज़ों के सेवन से हमारे शरीर को बड़ी खतरनाक बीमारियां होती हैं।

नेमत और अम्न व सुकून को पाकर हम अल्लाह के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनें, उसका आज्ञाकारी बन जाएं, जो बड़ी ताक़त वाला और शक्तिशाली है जिसके एक मामूली से झटके से दुनिया वालों की अकलें गुम हैं, उनकी गरदें झुकी सी नज़र आ रही हैं, वह डरे सहमे और उनकी शैली बदल गई है, बल्कि वह कुदरत के सामने घुटने टेक दिए हैं। अगर अब भी न जागे, अपने सोच व विचार को नहीं बदला, जिन्दगी का तरीका दुरूस्त नहीं किया और इस्लाम की वास्तविक आत्मा से जीवन में सुधार पैदा नहीं किया तो अल्लाह की पकड़ से नहीं बच सकें गे जिस तरह पिछली कौमें सबा, कारून वगैरह अल्लाह की नाशुकरी की वजह से उसके अजाब का शिकार हो गईं।

मौजूदा दैर के ताकतवर देश जो अपने अहंकार के नशे में दुनिया को सबक सिखाने की बात करते थे वह कोरोना जैसे न दिखाई देने वाले वायरस के सामने चित हो गये और लाशें गिनने लगे, उनका सारा नशा उतर गया और अल्लाह ने यह समझा दिया कि जब कुदरत को जलाल आ जाएगा तो तुम्हारा नक़्शा बिगाड़ देने में देर नहीं लगेगी।

हमें अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए, अगर हम उसकी फरमांबरदारी (आज्ञापालन) करते रहेंगे तो अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित रहेंगे और उसकी नेमतों का शुक्रिया अदा करते हुए ज़िन्दगी अम्न व अमान के साथ गुज़ारें गे तो अल्लाह का वादा है।

''अगर तुम शुक्रगुज़ार बनो गे तो तुम को और ज़्यादा नेमतों से नवाज़ेंगे और अगर तुमने नाशुकरी की तो याद रखो कि मेरा अज़ाब बहुत सख्त है''। (सूरे इब्राहीम-७)

कुरआन में सद्व्यवहार की शिक्षाएं

प्रो० डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

कुरआन सद्व्यवहार तथा सदाचार का इन्साइक्लोपीडिया है, जिनको कुछ पृष्ठों में समाहित करना असम्भव है। इसलिए यहां कुछ का वर्णन किया जा रहा है।

❑ प्रेम और दयालुता

''यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की और निश्चय ही इसमें बहुत सी निशानियां उन लोगों के लिए हैं, जो सोच-विचार करते हैं,''(सूरा-३०,अर-रूम, आयत-२१)

❑ एक-दूसरे का सहयोग करना

''ऐसा न हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। पुण्य कर्मों तथा ईश-भय के काम में तुम एक दूसरे का सहयोग करो और अपुण्य कर्मों और एक-दूसरे पर अत्याचार करने पर सहयोग मत करो। अल्लाह का भय रखो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देने वाला है''। (सूरा-५, माइदा, आयत-२)

❑ न्याय करने का आदेश

''निश्चय ही अल्लाह न्याय करने, भलाई करने, तथा नातेदारों को (उनका हक़) देने का आदेश देता है और अशलीलता, बुराई तथा सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो''। (सूरा-१६, अन-नह्ल, आयत-९०)

❑ लोगों से भली बात करना

अल्लाह ने बनी इसराईल से जो वचन लिया था, उसमें भली बात करना भी शामिल था, परन्तु उन्होंने इसको भंग कर दिया।

''याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया था कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की बन्दगी न करना, और मां-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों तथा निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार करना और यह कि लोगों से भली बात करना और नमाज़ का आयोजन करना और ज़कात देना। तो तुममें थोड़े-से (लोग) ही इन बातों पर स्थिर रहे और अधिकतर लोग इनसे फिर गए''। (सूरा-अल बकरा आयत-८३)

❑ बुराई का सुधार भलाई से करना

एक मुसलमान को अत्यन्त सहनशील तथा कोमल स्वभाव होना चाहिये, जो बुराई का जवाब बुराई से नहीं, बल्कि भलाई से दे। इसी की ओर कुरआन संकेत करता है।

''अच्छे आचरण और बुरे आचरण समान नहीं होते। इसलिए बुरे आचरण को अच्छे आचरण से दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच बैर

था, जैसे वह कोई घनिष्ठ मित्र हो। और यह बात केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जिन्होंने धैर्य से काम लिया। और उन लोगों को प्राप्त होती है जो बड़े भाग्यवान होते हैं। और यदि शैतान के उकसाने से कभी तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा हो तो अल्लाह की पनाह मांगो। निस्न्देह वह सुनने और जानने वाला है।'' (सूरा-४१, हा-मीम अस-सजदा, आयतें-३४-३६)

❑ ठीक और सीधी बात करना

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और बात कहो तो ठीक और सीधी कहो। वह तुम्हारे कर्मों को संवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन किया, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।'' (सूरा-३३, अल-अहज़ाब, आयतें-७०-७१)

❑ सफलता प्राप्त करने वाले मोमिनों के लक्षण

''सफल हो गए ईमान वाले

जो अपनी नमाज़ों में नम्रता अपनाते हैं।

और जो व्यर्थ बातों से बचने वाले हैं।

और जो ज़कात अदा करते हैं।

और जो अपनी शर्मगाहों (गुत्तांगों) की रक्षा करते हैं। सिवाय अपनी पत्नियों के और लौंडियों के, जो उनके अधिकार में हों। इस दशा में वे निन्दनीय नहीं हैं परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं।

और जो अपनी जमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं।

और जो अपनी नमाज़ों को सही समय पर अदा करते हैं।

यह लोग वारिस होंगे, जो विरासत में फिरदौस पांगे। वे उसमें सदैव रहेंगे''। (सूरा-२३, अल-मोमिनून, आयतें-१-११)

❑ क़र्ज़ लेने वाला अगर तंगी में पड़ जाए तो उसको कुछ अवसर देना

''यदि क़र्ज़ लेने वाला तंगी में पड़ जाए, तो उसका हाथ खुलने तक उसे समय दो। और अगर दान कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होगा, अगर तुम जानते।'' (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२८०)

अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला निश्चित समय पर क़र्ज़ न लौटा सके तो उसको कुछ और समय दे दो और अगर तुम अनुभव कर लो कि अब वह क़र्ज़ वापस नहीं कर सकता, तो क्षमा कर दो। जो बहुत बड़ा पुण्य कर्म है। इस बात को जानना चाहिए।

❑ मतभेद की दशा में अल्लाह तथा उसके रसूल की ओर रूजू करना

''ऐ ईमानवालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो, और रसूल का कहना मानो, और उसका भी कहना मानो जो तुम्हारा अधिकारी हो। फिर यदि तुम्हारे बीच कोई मतभेद हो जाए तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर पलटो''। (सूरा-४, अन-निसा, आयत-५९)

अर्थात् कैसी भी समस्या हो, उसको हल करने के लिए अल्लाह की किताब कुरआन, और नबी की सुन्नत की ओर रूजू करना चाहिए, क्योंकि मुसलमानों के मार्गदर्शन के यही दो स्रोत हैं।

❑ मजलिस में कुशादगी पैदा करना

''ऐ ईमान वालो, जब तुमसे कहा जाए, मजलिसों में जगह कुशादा कर दो तो कुशादा कर दो। अल्लाह

तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा। और जब तुमसे कहा जाए, उठ जाओ तो उठ जाया करो। तुममें से जो ईमान लाए और उन्हें ज्ञान प्रदान किया गया, अल्लाह उनके दर्जों को उच्चता प्रदान करेगा। जो तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है''। (सूरा-५८, अल- मुजादला, आयत-११)

मजलिस में कुशादगी का अर्थ है कि इस प्रकार बैठा जाए कि दूसरों को भी स्थान मिल जाए।

❑ नीची निगाहें रखना

''ईमान वालों से कहो, वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाह की रक्षा करें। यह उनके लिए बहुत पवित्रता की बात है। निस्सन्देह अल्लाह उनके कर्मों से परिचित है। (और इसी प्रकार) ईमान वाली स्त्रियों से कहो, वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें''। (सूरा-२४, अन-नूर, आयतें-३० -३१)

भली बात कहना उस दान से उत्तम है जिसके पीछे दुख हो।

भली बात कहना, और क्षमा से काम लेना उस सदक़े से उत्तम है जिसके पीछे दुख देने की बात हो। और अल्लाह निस्पृह और सहनशील है। (सूरा-२, अल बक़रा, आयत२६३)

अर्थात किसी को दान तथा सदक़ा देकर इसका एहसान जताना दुख पहुंचाने के समान है। इससे उत्तम तो यही था कि केवल भली और अच्छी-अच्छी बातें कर ली जातीं।

❑ फ़क़ीर (मोहताज) की बेनियाज़ी

''यह उन फ़क़ीरों (मोहताजों) के लिए है जो अल्लाह की राह में घिरे हुए हैं। (जीविका के लिए) धरती में दौड़-भाग नहीं कर सकते। उनके स्वाभिमान के कारण अनभिज्ञ लोग उनको धनवान समझते हैं। तुम उनके लक्षणों से उन्हें पहचान सकते हो। वे लोगों से चिमट-चिमटकर नहीं मांगते। और जो धन भी तुम ख़र्च करोगे तो निस्सन्देह अल्लाह उसका जानने वाला है।'' (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-२७३)

नबी फ़क़ीरी में भी लोगों से बेनियाज़ी की दुआ करते थे।

''ऐ अल्लाह अपने अतिरिक्त किसी और का मोहताज न बना''। (देखिए तिरमिज़ी ३५६३ तथा हाकिम १:५३८)

❑ धैर्य के द्वारा सफलता प्राप्त करना।

''धैर्य और नमाज़ से सहायता लो, निस्सन्देह नमाज़ है तो बहुत कठिन, परन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल अल्लाह से भयभीत हैं।'' (सूरा-२,अल बक़रा, आयत ४५)

''ऐ इमान वालो धैर्य और नमाज़ से सहायता लो। निसन्देह अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।'' (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-१५३)

''निस्सन्देह हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे कुछ भय से, कुछ भूख से, कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से। (ऐसी दशा में) धैर्यवानों को शुभ-सूचना दे दो। ये वे लोग हैं कि जब इन्हें कोई कष्ट पहुंचता है तो कहते हैं, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (अर्थात निस्सन्देह हम अल्लाह ही के लिए हैं, और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं) यही लोग हैं जिनके लिए उनके रब की विशेष कृपाएं हैं और दयालुता भी। और यही लोग सीधे मार्ग पर चलने वाले हैं। (सूरा-२, अल-बक़रा, आयतें१५५-१५७)

❑ **अमानतों को उनके मालिकों के हवाले करना**

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके मालिकों के हवाले कर दो। और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्यायपूर्वक निर्णय किया करो। अल्लाह तुम्हें कितना उत्तम उपदेश देता है। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है।'' (सूरा-४, अन-निसा, आयत-८५)

❑ **न्याय का मार्ग अपनाना**

''अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और उनके साथ इनसाफ़ करो जिन्होंने तुमसे ध र्म के कारण युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है''। (सूरा-६०, अल-मुम्तहिना, आयतें-८,९)

''ऐ ईमान वालो! इनसाफ़ की गवाही देते हुए अल्लाह के मार्ग पर शक्ति के साथ डटे रहो। कहीं ऐसा न हो कि किसी गिरोह की दुश्मनी तुमको इस बात पर उभारे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो। इन्साफ़ करो, यह तक़वा (ईश-परायणता) से निकटतम है। अल्लाह से डरते रहो, निस्सन्देह तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उससे परिचित है।'' (सूरा-५, अल-माइदा, आयत-८)

प्रत्येक व्यक्ति को वही मिलेगा जो उसने किया

''और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया।'' सूरा-५३, अन-नज्म, आयत-३९)

पापी अपने पाप का स्वयं उत्तरदायी है

''जो कोई पाप करेगा, वह अपने लिए करेगा, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और तत्वदर्शी है''। (सूरा-४, अन-निसा, आयत-१११)

''यह कि प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ करता है उसका फल वही भोगेगा, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा''। (सूर-६, अल अनआम, आयत-१६४)

''यह कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।'' सूरा-५३, अन नज्म, आयत-३८

❑ **प्रतिज्ञा पूरी करना**

''प्रतिज्ञा पूरी करो, निश्चय ही प्रतिज्ञा के विषय में पूछा जाएगा।'' सूरा-१७, बनी इसराईल, आयत-३४

अच्छे और बुरे कर्म का फल स्वयं चखना पड़ेगा।

''जिस किसी ने अच्छा कर्म किया तो अपने ही लिए किया, और जिस किसी ने बुरा कर्म किया तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा वास्तव में तुम्हारा रब अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता''। (सूरा-४१, हा-मीम अस-सजदा, आयत-४६)

❑ **धैर्य ग्रहण करना बदला लेने से उत्तम है**

''यदि बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुंचाया गया हो, तथा यदि धैर्य रखो तो निस्संदेह धैर्यवानों के लिए यही उत्तम है।'' (सूरा-१६, अन-नहल, आयत-१२६)

❑ **अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने वाले लोग**

''जो लोग अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनकी उपमा उस दाने जैसी है, जिसमें से सात बालियां निकलें और प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। अल्लाह जिसे चाहता है बढ़ोतरी प्रदान करता है और अल्लाह असीमित

ज्ञान वाला है।'' (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२६१)

❑ **अच्छी बात की उपमा अच्छे वृक्ष की है**

''क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने शुभ बात की कैसी उपमा दी है? वह एक शुभ वृक्ष के सदृश है, जिसकी जड़ें गहरी जमी हुई हैं। और उसकी डालियां आकाश तक पहुंची हुई हैं। और अपने रब की आज्ञा से वह वृक्ष हर समय अपना फल दे रहा है। अल्लाह ये उदाहरण इसलिए बयान करता है ताकि वे ध्यान दें। और अशुभ और अशुद्ध बात की उपमा एक अशुभ वृक्ष की है, जो भूमि के ऊपर से ही उखाड़ फेंका गया। उसके लिए कुछ भी स्थिरता नहीं है''। (सूरा-१४, इबराहीम, आयतें-२४-२६)

अल्लाह अच्छाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है

''निस्संदेह अल्लाह न्याय का, भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का हुक्म देता है। और अश्लीलता, बुराई तथा सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें इन बातों का उपदेश देता है, ताकि तुम ध्यान दो''। (सूरा-१६, अन-नह्ल, आयत-९०)

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

हमारा ईमान

रैहाना खातून

हर मुसलमान इस्लाम के पांच बुनियादों पर विश्वास रखता है, अल्लाह एक है उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, हज़रत मुहम्मद अल्लाह के भेजे गये रसूल हैं, नमाज़ को काइम करना, फर्ज रोज़े रखना, जकात देना और सामर्थ होने पर हज करना।

अल्लाह पर ईमान लाने के बाद एक मुसलमान पर यह जिम्मेदारी लागू होती है कि वह उसकी इबादत करे, उसी से अपनी हाजत तलब करे, उसी ही से मदद मांगे अर्थात हर मुसलमान की इबादत अल्लाह की रिजा और खुशी के लिये होनी चाहिए।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि हर मुसलमान उनके बताए गये तरीके के अनुसार अपनी ज़िन्दगी गुजारे, उन्होंने इबादत करने का जो तरीक़ा बताया है उसी के अनुसार इबादत करे, व्यापार करने का जो तरीका बताया है उसी के मुताबिक व्यापार करे, रोज़ा रखने का जो तरीका बताया है उसी के अनुसार रोज़ा रखे, अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का मतलब यह है कि उनकी पूर्ण रूप से पैरवी की जाए और इसी पैरवी से वह इस्लाम का पूर्ण रूप से प्रतिनिधुत्व कर सकता है, वह अपने व्यवहार से बता सकता है कि इस्लाम एक इन्सान से क्या चाहता है, और उसके दुनिया में आने का मक़सद क्या है। क्योंकि हमारा कर्म ही पहली नज़र में यह बताता है कि हम किसी चीज़ को पेश करके दुनिया वालों पर क्या स्पष्ट कर रहे हैं, इसलिये हमारे कर्म से यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम किस धर्म की नुमाइन्दगी (प्रतिनिधुत्व) कर रहे हैं। ऊपर इस्लाम के जिन पांच बुनियादों का उल्लेख किया गया है वह हमारे व्यवहार से इस्लाम की शिक्षाओं को स्पष्ट करते हैं, ईमान का सुबूत कर्म से नज़र आता है, हमारे ईमान और कर्म में अन्तर नहीं होना चाहिए ईमान लाने के बाद अमल से ईमान में बढ़ोतरी होती है और अमल न करने से ईमान में कमी पैदा होती है। ईमान लाने के बाद ईमान का व्यवहारिक रूप भी नज़र आना चाहिए, कुरआन में हमें एक बेहतरीन उम्मत (समुदाय) करार दिया गया है लेकिन इस बेहतरीन उम्मत होने के दावे को अपने कर्मों से साबित भी करना होगा।

इन पांचों बुनियाद पर निरन्तर और लगन के साथ अमल करना चाहिए, हम अपने कर्मों से इस्लाम की छवि को पेश कर सकते हैं, यह बहुत आसान है, लेकिन आसान होने के बावजूद हम इससे इतने गाफिल हैं, और हमारी गफलत को ही दूसरों ने इस्लाम समझ लिया है, यह एक ऐसा भ्रम है जिस को हम इस्लाम की तालीमात पर अमल करके ही दूर कर सकते हैं, आज हर जगह लोग जमीनी स्तर पर हक़ीकत को देखना चाहते हैं, लेकिन इस के लिये ज़रूरी है कि हम इन बुनियादों को व्यवहारिक रूप दें और अपने कर्म से इस्लाम की वह छवि पेश करें जो लोगों के लिये आदर्श बन जाए। सहाबा किराम ने अपने अमल से ही इस्लाम को पूरी दुनिया में फैलाया था। हमारा कर्म इस्लाम की गवाही देता है।

संबन्धों में बिगाड़ के कारण और एलाज

सिराज अहमद सलफी

इस्लाम हमेशा, अम्न व शान्ति, भाई चारा और एक दूसरे के अधिकारों को पूरा करने की दावत देता है, हर एक को आपसी प्रेम और शान्तिपूर्ण जीवन जीने पर बल देता है लेकिन मौजूदा दौर के अन्दर घमण्ड और दूसरों को नीचा दिखाने की वजह से आपस में मतभेद, बिगाड़ और बिखराव पैदा हो रहा है लेकिन अगर चन्द बातों का ख्याल रखा जाए तो आपसी संबन्धों में बिगाड़ से बचा जा सकता है।

किसी की गैर मौजूदगी में बुराई करने का नाम ग़ीबत है यह बहुत सी बुराईयों की जड़ है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से पूछा तुम जानते हो कि ग़ीबत क्या है। सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अनहुम ने कहा कि अललाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपने भाई का ज़िक्र इस तरह करना कि उसको नागावर गुजरे लोगों ने कहा कि अगर वह बुराई उसमें मौजूद हो तो आप ने फरमाया अगर उसके की मौजूदा बुराई को बयान करने गे तो, गीबत होगी और अगर वह बुराई मौजूद न हो तो उस पर झूठे आरोप बांधोगे। (मुस्लिम शरीफ २५८६)

चुगलखोरी से आपसी संबन्ध बिगड़ जाते हैं यह भी महा पाप है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह बहुत ही बुरे लोग हैं जो इधर की बात सुन कर उधर पहुंचाते हैं और दोस्तों और संबन्धित लोगों में जुदाई पैदा करते हैं। (मुसनद अहमद-४/२२७)

चुगलखोर के बारे में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चुगलखोर जन्नत में नहीं जाएगा। (सहीह मुस्लिम १०५)

बदगुमानी और जासूसी भी आपस के तअल्लुकात में बिगाड़ पैदा करती है और इससे नफरत को बढ़ावा मिलता है। इसी लिये अल्लाह तआला ईमान वालों को इन बुरे कामों से बचने का हुक्म देता है।

'' ऐ ईमान वालो! तुम ज़्यादा गुमान से बचो क्योंकि बाज़ गुमान पाप के हैं। और आपस में जासूसी न किया करो'' (सूरे हुजुरात-१२)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम बदगुमानी से बचो यह सबसे झूठी बात है तुम चोरी छिपे किसी की बात न सुना करो और न ही एक दूसरे की ऐब (कमी) को तलाश करो। (बुखारी-६०६६)

मज़ाक उड़ाना और गलत शब्दों से पुकारना हराम है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो कोई क़ौम किसी कौम का मज़ाक न उड़ाए संभव है कि वह उन लोगों से बेहतर हो जिन का मज़ाक उड़ाया जा रहा है। और न ही मोमिना औरतें मोमिना औरतों का मज़ाक उड़ाएं संभव है कि वह उनसे अच्छी और बेहतर हों जिन का मज़ाक उड़ाया जा रहा है और आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओ और न एक दूसरे को बुरे अलक़ाब से पुकारो''। (सूरे हुजुरात-११)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी के बुरा होने के लिये यही काफी है कि वह अपने भाई को हक़ीर (कमतर) समझे (सहीह मुस्लिम)

हसद जलन से भी आपस के संबन्ध बिगड़ जाते हैं। कुरआन में

अल्लाह तआला ने फरमायाः हसद करने वाले की बुराई से बचो जब वह हसद करे। (सूरे फलक)

किसी से संबन्ध तोड़ना, या नफरत करना इस्लाम में हराम है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उस से अच्छा जवाब दो या वही अलफाज़ (शब्द) दोहरा दो''। (सूरे निसा-८६)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी मुसलमान के लिये जायज़ नहीं है कि वह अपने भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े। (सहीह बुखारी-६०६)

आपस में मिलनसारी और प्रेम को बढ़ावे का तरीक़ा भी बताया गया है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम लोग जन्नत में उस वक़्त तक दाखिल नहीं हो सकते जब तक कि ईमान न ले आओ और तुम उस वक़्त तक ईमानदार नहीं हो सकते जब तक आपस में मुहब्बत न करो और क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊं कि अगर तुम उस पर अमल करने लगो तो आपस में मुहब्बत पैदा हो जाएगी। वह यह है कि आपस में सलाम को फैलाओ। (सहीह मुस्लिम)

❑ ❑ ❑

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844
शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व अमीर
हाफिज़ मुहम्मद यहया देहलवी का इन्तेक़ाल
देश, समुदाय और जमाअत के एक सुनहरे काल का अन्त :
मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली २२ नवम्बर २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के संरक्षक और पूर्व अमीर हाजी हाफिज़ मुहम्मद यहया बिन हाफिज़ हमीदुल्लाह देहलवी रह० के इन्तेक़ाल पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनकी मौत को देश, समुदाय और जमाअत का बड़ा खसारा करार दिया है और कहा है कि हाफिज़ साहब के इन्तेकाल से देश, समुदाय और जमाअत के एक सुनहरे दौर का अन्त हो गया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हाफिज मुहम्मद यहया देहलवी रह० को अल्लाह ने बड़ी खूबियों से सम्मानित किया था। आप देश, समुदाय और जमाअत के महत्वपूर्ण स्तंभ, निस्वार्थ मार्गदर्शक, सफल, प्रबन्धक और निस्वार्थ सरपरस्त थे। दीन पर स्थिरता, सोच विचार में और नाजुक से नाजुक हालात में भी विचित्र ठेहराव और जमाव उनकी पहचान थी और यह सब उच्च खूबियां जहां उनको बाप से वरासत में मिली थीं वहीं उनका पवित्र स्वभाव, तहज्जुद गुज़ारी से पैदा हुई थी। आप उम्मत की एकता, राष्ट्रीय सौहार्द और सांप्रदायिक सदभावना के बड़े झण्डावाहक थे और हर वर्ग से सुगम संबन्ध रखते थे लेकिन दीन व जमाअत की खिदमत उनके स्वभाव में दाखिल थी। आप बड़े परहेज़गार, मेहमान नवाज़ और ओलमा के क़द्रदां थे। बड़े अफसोस की बात है कि देश, समुदाय और जमाअत का एक चमकता सितारा सुबह ६ बजे ६५ साल की उम्र में दिल्ली में हमेशा के लिये डूब गया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हाफिज़ मुहम्मद यहया देहलवी का परिवार इल्म व अमल से माला माल रहा है। आप के पिता श्री हाफिज हमीदुल्लाह आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के उप महा साचिव और ट्रेजरर थे। पूरी उमर आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स की सेवा और उसके विकास में लगा दी। वह अत्यंत दानवीर थे आप की दानवीरता का स्रोत हिन्दुस्तान से लेकर हिजाज तक फैला हुआ था। हिन्दुस्तान के दर्जनों मदर्से आप के आर्थिक सहयोग से चलते थे, आप ने ऐसे दीनी महौल में महानता और सज्जनता के क्षांव तले १६२५ ई० में आखें खोलीं, आप का घराना दीनी माहौल से सुसज्जित था इसलिये आप का पालन पोषण भी खालिस दीनी माहौल में हुई। प्रारंभिक शिक्षा करीब की मस्जिद में चलने वाले मकतब में हुई। फिर इसी मदर्से में कुरआन हिफ्ज़ (कंठस्थ) किया। हिफ्ज पूरा होने के बाद जमाअत के मश्हूर सलफी एदारा दारूल हदीस रहमानिया दिल्ली में दाखिला लिया और वहां के अध्यापकों से अरबी फारसी की तालीम हासिल

की। आप के अध्यापकों में शैखुल हदीस मौलाना उबैदुल्लाह रहमानी मुबारकपूरी रह० और मौलाना अब्दुल जलील रहमानी रह० खास तौर से उल्लेखनीय हैं। फिर तिजारत से जुड़ गये जो आप का पैत्रिक पेशा था लेकिन ओलमा की संगत में रह कर उनसे लाभान्वित हुए और उनके मार्गदर्शन में बहुत से जमाअती काम भी अंजाम दिए इसी तरह कारोबार के साथ दीन से भी जुड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आप को शुरू ही से मिल्लत व समाजी समस्याओं के समाधान में दिलचस्पी थी। चुनान्चे महल्ला किशन गंज की समाज सुधार कमेटी के अध यक्ष बनाए गये तो अध्यक्ष की हैसियत से महल्ला कमेटी की इस्लाह की और अवाम की जटिल समस्याओं को हल किया। १९७४ ई० के हिन्दू मुस्लिम फेलिंग के दौरान इसको रोकने और उनके बीच भाईचारा पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और देश की महत्वपूर्ण हस्तियों से भी संबन्ध स्थपित किए चुनान्चे पूर्व राष्ट्रपति फखरूददीन अली अहमद, पूर्व गवर्नर खुर्शीद आलम खान, डिप्टी मिनिस्टर रेलवे मुहम्मद यूसुफ सलीम से बड़े गहरे संबन्ध थे। १९४४ ई० में आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के सदस्य बनाये गये। १९५० ई० में पिता श्री के इन्तेकाल के बाद उनके जारी किए हुए मिशन को न सिर्फ जारी रखा बल्कि और ज्यादा आगे बढ़ाया १९४७ में देश विभाजन के बाद जमाअत के अधिकतर लोग पाकिस्तान चले गये, देश में फसाद के नतीजे में जमाअत की व्यवस्था बिखर गई इन हालात में आप ने जमाअत को संभाला। जनवरी १९५१ में कांफ्रेन्स के अध्यक्ष मौलाना अब्दुल वहाब आखरी रह० ने आप को महा सचिव बनाया तो आप ने जमाअत में नई रूह फूंकी। १९५२ ई० में जमाअत के आर्गन तर्जुमान को जारी किया और सारा खर्च खुद सहन किया। १९५४ में औक़ाफ के बारे में संसद में काज़िमी बिल पेश हुआ इसमें जमाअत अहले हदीस का नाम नहीं था इस में आपने जमाअत का नाम शामिल करवाया। १९७९ ई० में अबुल फज़ल इन्कलेव ओखला नई दिल्ली में पचहत्तर हज़ार स्कवायर फिट जमीन (जहां आज अहले हदीस कम्पलैक्स काइम है) पूर्व अमीर जमीअत अहले हदीस हिन्द डा० सैयद अब्दुल हफीज़ सलफी रह० की सरपरस्ती में आप के प्रयासों से और डा० सैयद अबुल अज़ीज साहब सचिव दारूल उलूम अहमदिया सलफीया दरभंगा एवं नायब अमीर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द और मौलाना शमसुल हक सलफी रह० पूर्व शैखुल हदीस जामिया सलफिया वाराणसी की मुनासिब तरीन जमीन खरीदने के लिये महीनों के प्रयासों से खरीदी गई। १९५२ ई० में आप को दोबारा महा सचिव बनाया गया। १९९५ में मर्कज़ी जमीअत अहले अहले हदीस हिन्द के नायब अमीर (उपाध्यक्ष) चयनित हुए। मौलाना मुख्तार अहमद नदवी रह० और मौलाना सफीउर्रहमान मुबारकपूरी रह० के त्यागपत्र देने के बाद दोबारा कार्यवाहक अमीर की हैसियत से जमाअत का नेतृत्व किया १४ अक्टूबर २००१ के शूरा के सत्र में आप जमाअत के अमीर चयनित हुए फिर २००६ ई० के चुनाव में दुबारा अमीर चुने गए और २०१७ तक इस पद पर विराजमान रहे और मरते दम तक जमीअत व जमाअत की सरपरस्ती करते रहे। आप के अध्यक्षता काल में अहले हदीस कम्पलैक्स में कई इमारतों का निमार्ण हुआ।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आप जमाअत के अनुभवी, बुद्धिजीवी और अच्छे विचारों के वाहक थे और अपनी १५ वर्षीय संगत व अनुभव की रोशनी में उनकी दूरदर्शिता,

जमाअती हमदर्दी और प्रतिष्ठा पूर्ण अध्यक्षता का समर्थक एवं साक्षी हूं। १९४४ से अब तक आप ने जमाअत को बहुत करीब से देखा, इसके उतार चढ़ाव को भली भांत जानते थे इसलिये हालात और अनुभव की रोशनी में जमाअत की सही दिशा में मार्गदर्शन फरमा रहे थे।

प्रेस रिलीज़ के अनुसार हाफिज साहब की तदफीन आज ही अस्र की नमाज़ के बाद पैत्रिक कब्रस्तान शीदीपूरा दिल्ली में हुई। जनाज़े की नमाज़ में ओलमा, अवाम और महत्वपूर्ण हस्तियों ने शिर्कत की। पसमादगान में बेवा, दो लड़के जनाब असअद साहब, जनाब मसऊद साहब, तीन लड़कियां और कई पोते पोतियां और निवासे निवासियां हैं। अल्लाह उनकी मग्फिरत फरमाए, गलतियों को माफ करे, जन्नतुल फिरदौस का वासी बनाए। सभी पसमांदगान को सबरे जमील अता फरमाए और जमाअत को उनका अच्छा विकल्प अता फरमाए।

प्रेस रिलीज़ के मुताबिक अमीरे मोहतरम के अलावा महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, कोषाअध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़, उपाध्यक्षगण डा० सैयद अब्दुल अजीज सलफी, हाफिर मुहम्मद अब्दुल कैयूम, उप महसिचव गण मौलाना मुहम्मद अली मदनी, मौलाना रियाज अहमद सलफी, हाफिज मुहम्मद यूसुफ और अन्य जिम्मेदारान और जमीअत के कार्यकर्ताओं ने उनके पसमांदगान और संबन्धितों से शोक व्यक्त किया है और उनके लिये मग्फिरत और दरजात की बुलन्दी की दुआ की है।

हाफिज़ मुहम्मद यहया देहलवी रह०

अतहर नक़वी

यह वह ख़ला है जो शायद न भर सके गा कभी
है सलफियों के लिये यह इक इब्तिलाए अज़ीम
वह इक मुजाहिद जाँबाज़ दीने ख़ालिस का
वह सरफरोश निगेहदार दीने इब्राहीम
वह बेकसों का मसीहा वह सलफियों का अमीर
वह एक पैकरे दानिश वह दीदहवर वह ज़ईम
मिसाल सुबहे बहाराँ थी ज़ात पाक उसकी
कि जैसे गुलशने हस्ती में एहतिजाज़े नसीम
वह अहले फिक्र व अमल का मुशीरे फरज़ाना
वह ख़ादिमाने जमाअत का इक वली हमीम
रहा हमेशा अज़ीमत का एक मीनार बुलन्द
वह सरबुलन्द अलर्रग़्म दुश्मनाने लईम
जब इन्तेशार की आँधी से इक तज़लुज़ुल था
तो उसने उठ के जमाअत की फिर से की तनज़ीम
लिखेगा जब कोई तारीख़ इस जमाअत की
तो इस अमीर को लिखेगा रहनुमाए अज़ीम
अदाए फर्ज़ की ख़ातिर वह इसका अज़्मे समीम
रिज़ाए हक़ के लिये था वह पैकरे तसलीम
वह उसकी शाने तहम्मुल व तमकिनत वह वक़ार
कि जैसे हो कोई ताजदार हफ्त इक़लीम
खुदा के दामने रहमत में है वह आसूदा
वह जाँनिसारे नबी बन्दा खुदाए-करीम

दो इतिहासिक और महान कारनामों के सिलसिले में

एक बड़ी ख़ुशख़बरी और पुरज़ोर अपील

प्यारे भाइयो! अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में चौथी मंज़िल का काम छत तक पहुंच चुका है और अहले हदीस कम्पलैक्स की दूसरी मंज़िल की छत की ढ़लाई के लिये आपके सदक-ए-जारिया का इन्तेज़ार है। इन हर दो महान और इतिहासिक शुभ कामों में हर व्यक्ति से तात्कालिक सहयोग की अपील है। इस महान यादगार और शताब्दियों की प्राचीन आरज़ुओं की पूर्ति और सपनों को साकार करने के लिये क्या आप सौ पचास और दस रूपये भी भेजने से माज़ूर हैं? फिर न कहना हमें खबर न हुई

निम्नलिखित एकाउन्ट नम्बर आप की सेवा में पेश है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. 629201058685 (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

पताः- 4116, बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश एवं शिक्षाएं

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम कामों में दायें साइड को पसन्द करते थे, पाकी हासिल करने में, कंघी करने में और जूता पहनने में। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह को हर वक़्त याद करते थे। (मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः बेशक अल्लाह बन्दे से खुश रहता है क्योंकि वह खाता है तो इस पर अल्लाह की हम्द बयान करता है और पानी पीता है तो इस पर भी अल्लाह की हम्द बयान करता है। (मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि वह अपने माल और आल औलाद से काट दिया गया। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान मुसलमान का भाई है न वह जुल्म करता है और न उसको दुख पहुंचाता है जो अपने भाई की जरूरत का ख्याल रखता है अल्लाह उसकी जरूरत पूरी करता है और जिसने किसी मुसलमान की किसी परेशानी को दूर कर दिया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसकी परेशानी में से किसी परेशानी को दूर कर देगा और जिसने किसी मुसलमान के ऐब को छुपाया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसके ऐब को छुपाये गा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे दोनों कनधों को पकड़ा और कहा तुम इस दुनिया में मुसाफिर या रास्ता पार करने वाले की तरह रहो। (बुखारी)

सालिम अपने बाप रजिअल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन दिया तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करे गा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक आदमी शिर्क और कुफ्र के बीच का फर्क़ नमाज़ का छोड़ना है। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः हर बन्दा अपने कर्म के अनुसार उठाया जाये गा। (मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाज़ बीवियां बयान करती हैं आपने फरमायाः जो किसी अर्राफ (भविश्य या गैब की बातें बताने वाला) के पास गया और उसने किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उसकी चालीस रातों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक आदमी शिर्क और कुफ्र के बीच का फर्क़ नमाज़ का छोड़ना है। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः हर बन्दा अपने कर्म के अनुसार उठाया जाये गा। (मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाज़ बीवियां बयान करती हैं आपने फरमायाः जो किसी अर्राफ (भविश्य या गैब की बातें बताने वाला) के पास गया और उसने किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उसकी चालीस रातों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी। (मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरे बक़रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायें गी। (बुखारी)

साबित बिन जह्हाक रजिअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मोमिन पर लानत करना उसके कत्ल के समान है। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू ज़र रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः छोटी सी भलाई को हक़ीर (मामूली) न समझो और अगर अपने भाई से मिलो तो उससे हंसते हुये मिलो। (मुस्लिम)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया तुम एक दूसरे से डाह (हसद) न करो, तुम ध ोका देने के लिये सामान की कीमत ज्यादा मत लगाओ, तुम आपस में कीना कपट दुश्मनी मत रखो, एक दूसरे से संबन्ध न तोड़ो और तुम में से कोई दूसरे से क्रय विक्रय के मामले में चढ़ा ऊपरी न करे। (सहीह मुस्लिम)

अबू हुरैरह रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया तुम हसद से बचो इसलिये कि हसद नेकियों को ऐसे ही खा जाती है जैसे कि आग ईंधन को खा जाती है।

अबू दर्दा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भी मुस्लिम बन्दा अपने किसी भाई की उसकी गैरमौजूदगी में उसके लिये दुआ करता है तो फरिश्ता कहता है तुम्हारे लिये ऐसी ही दुआ हो। (मुस्लिम)

मुआविया रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसके साथ अल्लाह भलाई करने का इरादा करता है तो उसको दीन की समझ दे देता है। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो तो वैसे ही कहो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है। (बुखारी, मुस्लिम)

❑ ❑ ❑

हसद के नुकसानात

मौलाना मुतीउल्लाह मदनी

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया तुम एक दूसरे से डाह (हसद) न करो, तुम धोका देने के लिये सामान की कीमत ज्यादा मत लगाओ, तुम आपस में कीना कपट दुश्मनी मत रखो, एक दूसरे से संबन्ध न तोड़ो और तुम में से कोई दूसरे से क्रय विक्रय के मामले में चढ़ा ऊपरी न करे। (सहीह मुस्लिम)

हसद हराम है इससे बचना ज़रूरी है यह ऐसी तबाह कुन चीज़ है कि नेकियाँ बर्बाद हो जाती हैं यह नेकियों के लिये आग के समान है जिस प्रकार आग ईंधन को जला देती है वैसे ही यह हसद नेकियों को जला कर राख कर देती है।

हसद की दुष्टता इस लिये भी बढ़ जाती है कि हसद करने वाला एक ही समय में कई मुसीबतों का शिकार होता है इसी लिये इस्लाम में हसद जैसी बुरी और निन्दित आदत से मना किया गया है।

अबू हुरैरह रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया तुम हसद से बचो इसलिये कि हसद नेकियों को ऐसे ही खा जाती है जैसे कि आग ईंधन को खा जाती है।

हज़रत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो बयान करते हैं कि आप स०अ०व० ने फरमाया किसी बन्दे के दिल में ईमान और हसद दोनों एक साथ नहीं पाये जा सकते। (नेसई)

इन तमाम हदीसों से बिल्कुल स्पष्ट है कि हसद एक बुरी अप्रिय निन्दित आदत है इसलिये हसद करने से मना किया गया है यह पिछली कौमों की बीमारियों में से एक है जिस का अन्जाम अत्याचार है। हसद और ईमान एक दिल में जमा नहीं हो सकते अर्थात मुसलमान हसद नहीं कर सकता है।

हसद की निन्दा में इमाम इब्नुल मोतज़ ने फरमाया कि हसद शरीर की बीमारी है।

इमाम जुनादा बिन अबी उमैया ने फरमाया कि बयान किया जाता है कि पहली गलती हसद है। इबलीस ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सजदा करने के बारे में उनसे हदस किया। आदम को वर्चस्व इबलीस के लिये जलन का सबब बन गया। हसद ही ने उसे अल्लाह की नाफरमानी (अवज्ञा) पर उभारा।

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन कहते हैं कि मैंने किसी दुनियावी चीज़ पर किसी से हसद नहीं किया। अगर वह जन्नती है तो उस जन्नती शख्स की दुनिया की किसी बात पर मैं हसद क्यों करूँ और अगर वह जहन्नमी है तो फिर जिस का ठिकाना जहन्नम है उसकी दुनिया की किसी चीज़ पर मैं क्यों हसद कर सकता हूं।

इमाम इब्ने हिब्बान ने फरमायाः हसद कमीनों की आदत है इससे दूर रहना अच्छे लोगों का काम हर आग को बुझाने वाला होता है लेकिन हसद की आग बुझती ही नहीं है।

इमाम अबुल लैस समरकन्दी ने कहा कि हसद से ज्यादा हानिकारक चीज़ कोई नहीं है महसूद (जिससे हसद किया जाये) को कोई दुख मिलने से पहले पांच सजाएं स्वयं हसद करने वाले को मिलती हैं।

लगातार रंज व गम, बिना सवाब वाली मुसीबत व परेशानी, निन्दा, अल्लाह की नाराजगी, अल्लाह की क्षमता से वंचित होना।

हसद के कारण

जब कोई इन्सान किसी सबब से किसी दूसरे के साथ दुश्मनी रखता है तो ऐसी सूरत में भी हसद हो जाता है।

जब एक शख्स जो ऊंचे स्थान पर विराजमान हो लेकिन दूसरा इस पद या स्थान में उससे ऊंचा हो तो ऐसी सूरत में भी छोटे पद वाला अपने से बड़े पद वाले से हसद करता है।

यहूद के ओलमा मुहम्मद स०अ०व० के ईश्दौत्य का ज्ञान रखते हुये भी आप पर ईमान नहीं लाये वजह यह थी कि उन्हें अपने राज्य व इमामत के पतन की आशंका थी और हसद में हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की पैग़म्बरी का इन्कार करते थे।

एक शख्स को हमेशा अपने बड़ेपन का एहसास रहता है अगर किसी और की तारीफ सुनता है तो उसे नागवार मालूम होता है और किसी की बदहाली पर खुश और मगन होता है वह दूसरे की पस्ती और पतन का इच्छुक होता है हसद की निन्दित आदत ही उसे हसद करने पर आमादा करती है।

घमण्ड एक बुरी आदत है इसके अलावा दूसरा जब माल और पद को पाता है तो उसे डर लगता है कि वह दूसरा भी इससे बड़ा बन गया वह दूसरे की तरक्की को बर्दाश्त करने की ताकत नहीं रखता इस तरह उसके अन्दर हसद की आग तेज हो जाती है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के साथ कुफ्फार का हसद इसी श्रेणी का था। इसके अलावा एक सबब यह भी है जैसे कि एक ही मकसद के पाने में कई लोगों के अपने प्रयास और तमाम लोगों को अपना ताबेदार बनाने की सख्त आरजू आदि।

हर इन्सान को हसद से बचना चाहिये। हसद से बचने का तरीका यह है हसद दीन और दुनिया में हसद करने वाले के लिये हानिकारक है जबकि जिस से हसद किया जा रहा है उसका कोई नुकसान नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि हसद करने वाला अपना दुश्मन है और इन्सान को इसका एहसास हो जाये तो फिर दिल में हसद की आग स्वयं ही बुझ जायेगी।

अगर मन में हसद करने का ख्याल पैदा हो तो इसके खिलाफ अमल करना चाहिये मिसाल के तौर पर जिससे हसद किया जा रहा है तो उसकी प्रशंसा की जाये।

हसद के दीन और दुनिया में क्या नुकसानात हैं, कुरआन व हदीस में इसके जो नुकसानात बताये गये हैं अगर इन बातों का इल्म हो जाये तो हसद से बचा जा सकता है।

हसद करने वाले से लोग नफरत करते हैं उसे अच्छी निगाह से नहीं देखते हैं। सभाओं में हसद करने वाले को निन्दित तरीके से याद किया जाता है और हसद करने वाला एकान्त में रंज व गम में लिप्त रहता है।

दुनिया की नेमत उसका ऐश व आराम, ,रोजी में तंगी और बढ़ोतरी, और प्रतिष्ठित लोगों का स्थान, और नेमत से वंचित होना यह सब अल्लाह की तरफ से मुकददर का हिस्सा है।

अगर हसद करने वाला अल्लाह के फैसले पर राजी रहे तो वह फिर किसी से हसद नहीं करेगा न किसी की नेमत पर कुढ़ेगा और न उसकी नेमत के खत्म होने की आशा करेगा, उसे जो कुछ भी प्राप्त है उस पर शुक्र का प्रदर्शन करेगा। इन्सान को चाहिये कि वह हसद से बचे अल्लाह की मेहरबानी और नेमतों की आशा करे।

अल्लाह तआला हम सबको हसद जैसी निन्दित आदत से बचने की क्षमता प्रदान करे।

❑ ❑ ❑

तक़्वा का फायदा

डाक्टर हाशिम अली अल अहदल

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी (सच्ची) बातें किया करो, अल्लाह तआला तुम्हारे काम को संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह को मआफ कर देगा, और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की ताबेदारी (अनुसरण और पैरवी) करेगा उसने बड़ी मुराद (मकसद) को पालिया'' (सूरे अह्ज़ाब-७०-७१)

व्यक्तिगत प्रशिक्षण और अल्लाह के तक़्वा (परहेज़गारी और उस का डर) के बीच ठोस और मजबूत संबन्ध पाया जाता है और इसका परिणाम यह होता है कि वह नेकियों को कुबूल करता है और कर्म को पाक व पवित्र कर देता है। (जादुल मसीर फी इलमित्तफ्सीर ६/४२७)

अल्लामा इब्ने कसीर रह० फरमाते हैं कि

''अल्लाह तआला ने बन्दों से यह वादा कर रखा है कि वह जब ऊपर कुरआन की आयतों में बयान किये गये नेक कामों को करेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें इस का पुण्य देगा, उनके अमाल की इस्लाह कर देगा यानी उन्हें नेक काम करने की क्षमता दे देगा उनके पिछले गुनाहों को मआफ कर देगा। और भविष्य में होने वाले गुनाह से तौबा की क्षमता दे देगा। (तफसीर इब्ने कसीर, ३/५२१)

इसी तक़्वा में बन्दे की दुनिया और आखिरत (मरने के बाद के जीवन) में भलाई है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! अगर तुम डरते रहोगे तो अल्लाह तआला तुम को एक फैसले की चीज़ देगा और तुम से तुम्हारे गुनाह को दूर कर देगा और तुम को बख्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है'' (सूरे अनफाल-२९)

तक़्वा अपनाने से दुनिया व आखिरत में भलाई है तक़्वा के लाभ यह हैंः

१. तक़्वा से बुराइयां मिटती हैं और नेकियों में बढ़ोतरी होती है।

२. तक़्वा से अल्लाह से मुहब्बत और सुरक्षा निश्चित हो जाती है।

३. तक़्वा से तमाम मामलों में मार्गदर्शन, और भलाई की क्षमता मिल जाती है।

४. तक़्वा अपनाने से सत्य और असत्य में अन्तर करने की शक्ति मिल जाती है।

५. तक़्वा से गम, और कठिनाइ दूर होती है।

६. तक़्वा से रोज़गार को पाने में आसानी पैदा हो जाती है।

७. तक़्वा अल्लाह से मुलाकात की तैयारी का माध्यम है।

८. तक़्वा से अल्लाह की पैरवी निश्चित हो जाती है और धरती पर स्थिरता प्राप्त होता है।

९. तक़्वा से क़्यामत की भयावहता और जहन्नम के अज़ाब से मुक्ति मिल जाती है।

१०. तक़्वा से अल्लाह की खुशी और जन्नत में ऊंचा दर्जा पाना संभव हो जाता है।

❑ ❑ ❑

जानवरों पर दया करने का फल

मौलाना अब्दुर्रऊफ रहमानी झण्डानगरी रह०

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक औरत इसलिए जहन्नम में डाल दी गई कि उसने बिल्ली को बांध दिया न उसे कुछ खाने पीने को दिया और न ही उसको आज़ाद छोड़ा कि खुद ही घूम फिर कर कुछ खा पी लेती। (बुखारी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि जानवरों के साथ निर्दयता, बेदर्दी का मामला और बिला वजह सताना और मारना अल्लाह को सख्त नापसन्द है और जहन्नम में ले जाने वाला काम है यानी नरक में जाने का सबब बन जाता है।

खुवाजा शिबली रह० के बारे में खतीब बगदादी लिखते हैं कि सर्दी की रात में खुवाजा शिबली रह० ने मस्जिद जाते हुए एक बिल्ली को देखा कि वह सख्त सर्दी की वजह से ठिठुर कर कांप रही है और वह कोई पनाह ढूँढ़ रही है। आप ने उसको उठाकर अपने आसतीन में ओढ़ा लिया और उसको आग तपाया। जब शिबली रह० का निधन हुआ तो किसी बुजुर्ग ने सपने में देखा और खुवाजा शिब्ली से पूछा कि मग्फिरत (क्षमा याचना) हो गया और आप का कौन सा कर्म अल्लाह को पसन्द आया फरमाया कि अल्लाह ने मुझसे खुद पूछा कि ऐ शिबली मैंने तुझको बख्श दिया लेकिन क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हें बख्श देने की वजह क्या है। मैंने कहा कि तुम्हारी एताअत, इबादत, परहेजगारी मेरी क्षमायाचना की वजह बनी।

अल्लाह ने कहा नहीं यह वजह नहीं है, तो उन्होंने (शिबली) ने कहा कि इस्लाम का प्रचार व प्रसार मेरी मग्फिरत की वजह होगी, अल्लाह ने कहा यह भी वजह नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह के नेक बन्दों की संगत की वजह से मेरी क्षमा याचना हुई हो गी। अल्लाह ने कहा कि नहीं यह भी वजह नहीं है। उन्होंने कहा ऐ अल्लाह तू ही बता दे कि असल वजह क्या है। अल्लाह ने फरमाया कि तेरी बख्शिश बिल्ली पर दया करने की वजह से हुई है। कि तुमने ठंडक से बचाने के लिये इस बिल्ली को अपने आसतीन में छिपा लिया था। आज मेरी रहमत तुझे मग्फिरत के दामन में छिपा रही है। (तारीख खतीब बगदादी)

एक बार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर में पड़ोस की एक बकरी घुस आई और उसने अपने मुंह में कुछ रोटियां उठा लीं, हज़रत आइशा रजियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि मैं झपट कर उठी और बकरी की तरफ दौड़ कर पहुंची। इतने में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे पुकार कर कहाः बची खुची रोटी जो मिल जाए ले लेना और पड़ोसी की बकरी को तकलीफ मत देना। (अल अद्बुल मुफरद)

इन तमाम अहादीस और वाक़आत से सबक मिलता है कि इन्सानों को जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनको सुख व आराम पहुंचाना चाहिए और तकलीफ देह चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए।

❑ ❑ ❑